हुड्डा-कैप्टन ने मलाई साथ-साथ काटी, अब लड़ रहे हैं

-वाई. के. रज्जन

हरियाणा में कांग्रेस की करारी हार के बाद उम्मीद की जा रही थी कि इससे सबक लेते हुए राज्य के कांग्रेसी नेता पार्टी में जान फूंकने के लिए कुछ करेंगे लेकिन इसके बजाय वे आपसी नूरा कुश्ती में उलझ गए हैं। जितने नेता हैं, उतने गुट हैं और उतने ही उनके कार्यकर्ता। मजे की बात ये है कि जब इनकी सरकार थी तब ये लोग सारी मलाई मिल बांटकर खा रहे थे।

हरियाणा के भ्रष्टतम मंत्रियों में से रहे कैप्टन अजय यादव का अचानक कांग्रेस से मोह भंग हो गया और उन्होंने पार्टी छोड़ने का ऐलान कर दिया है। उन्होंने सीधे-सीधे अपने पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा पर हमला बोला है। ये बात किसी से छिपी नहीं है कि हुड्डा ने 10 साल तक कांग्रेस को अपने जूते के नीचे रखा और खुद की मनमानी करता रहा। कैप्टन उसके मंत्रिमंडल का अकेला ऐसा मंत्री था जिसे अकेले अपने मंत्रालय की मलाई खाने की छूट थी। बाकी सारे मंत्रियों की मलाई हुड्डा अकेले खाता था। लेकिन कैप्टन ने अचानक तरह-तरह के बहाने तलाशकर कांग्रेस में दम घुटने की शिकायत कर दी लेकिन इसके लिए हमें इन दिनों हरियाणा में चल रही राजनीति को समझने की जरूरत है जिसकी वजह से कैप्टन ने ये कदम उठाया है।

मलाई चाहिए, कहीं से भी मिलें

सबसे पहले कांग्रेस की बात

हारने के बाद ये लगा था कि पार्टी हुड्डा, तवंर जैसे नेताओं से छुट्टी पा लेगी। लेकिन अचानक हरियाणा का प्रभारी बदलकर कमलनाथ को बना दिया गया। जिनके भ्रष्टाचार के किस्से मनमोहन सिंह कार्यकाल में सत्ता के गलियारों में गूंजते रहे हैं। कमलनाथ ने कांग्रेस आलाकमान को पट्टी ये पढ़ाई कि हरियाणा में अगर फिर से वापसी करनी है तो हमें जाट लीडरशिप की तरफ लौटना होगा। जाट मौजूदा बीजेपी सरकार से नाराज भी चल रहे हैं। कमलनाथ ने आला कमान को ये भी समझाया कि हाल ही में हरियाणा के जो जाट जागे हैं, उसके पीछे हुड्डा समर्थक हैं। इसलिए हुड्डा को हरियाणा में अभी नजरन्दाज करना ठीक नहीं रहेगा। आलाकमान ने कमलनाथ की बात तो मानी लेकिन उसने एक अच्छा काम ये किया कि स्व. बंसीलाल की बेटी किरन चौधरी को बराबर का महत्व देना शुरू कर दिया और उधर स्व. भजनलाल के बेटे कुलदीप विश्नोई की भी पार्टी में वापसी करा दी। इससे हरियाणा में संतुलन बनाने की कोशिश की गई।

इस घटनाक्रम से चालाक कैप्टन की नींद हराम हो गई। उन्हें परिपक्व नेता की तरह समझ में आ गया कि बेशक वे दक्षिण हरियाणा-दक्षिण हरियाणा करते रहें, कांग्रेस में उन्हें महत्व मिलने वाला नहीं है। जबकि वो तो आने वाले समय में मुख्यमंत्री बनने का ख्वाब पाले हुए बैठे हैं।

कैप्टन ने बीजेपी से संपर्क बढ़ाना शुरू कर दिया। इस समय वे बीजेपी की बड़ी लीडरशिप के संपर्क में हैं और कोई ताज्जुब नहीं कि वे आने वाले समय में बीजेपी का दामन थाम लें। ये वही कैप्टन हैं जो अभी तक बीजेपी और आरएसएस को सांप्रदायिक बताकर किनारा किए हुए थे लेकिन राजनीति का नशा ऐसा होता है कि नेता बेटे को भी अपना बाप बना लेता है।

लेकिन कैप्टन बहुत छोटी बात पर कांग्रेस छोड़कर जा रहे हैं। उन्होंने प्रदेश के प्रभारी महासचिव कमलनाथ पर आरोप लगाए कि पार्टी के सीनियर नेताओं के साथ मीटिंग में उन्हें नहीं बुलाया गया। सूत्रों के मुताबिक, मीटिंग से एक दिन पहले कैप्टन को संदेशा भेज कर बता दिया गया था कि उन्हें मीटिंग में नहीं बुलाया जा रहा। उन्हें न बुलाए जाने के पीछे वजह गिनाई गई कि वे पार्टी व लीडरशिप के खिलाफ बयानबाजी करते हैं। पूरा मामला हुड्डा समर्थक बनाम हुड्डा विरोधी बन गया है। कैप्टन ने भी कमलनाथ और हुड्डा पर मिलीभगत का आरोप लगाया है। मीटिंग में कैंप्टन के शामिल होने पर हुड्डा ने वीटो कर दिया था। हुड्डा का कहना था कि पार्टी को छोड़ना या बने रहना व्यक्ति का निजी मामला है। मैं इस मामले को गंभीरता से नहीं लेता। हालांकि कैप्टन से पार्टी के सीनियर नेताओं की नाराजगी की एक वजह बीजेपी से उनके नजदीकी भी बताई जा रही है। चर्चा है कि कैप्टन की सीएम खट्टर से मुलाकात पार्टी को नागवार गुजरी है।

बीजेपी भी कम चालाक नहीं है। उसने भी कांग्रेस की आपसी लड़ाई में रोटी सेंकने की कोशिश की। कैबिनेट मंत्री राम बिलास शर्मा ने कहा कि यादव के पिता स्वर्गीय राव अभय सिंह तो एक समय जनसंघ के पदाधिकारी रहे हैं और अगर यादव की बीजेपी में रुचि है तो उनका स्वागत है। पता चला है कि कांग्रेस के कुछ नेता उन्हें मनाने में जुटे हैं, जिससे हुड्डा विरोधी भी पार्टी में मौजूद रहे। खुद कमलनाथ, कांग्रेस विधायक दल की नेता किरण चौधरी और हरियाणा कांग्रेस अध्यक्ष डॉ. अशोक तंवर इस कोशिश में हैं कि यादव किसी तरह मान जाएं और पार्टी छोड़ने के ऐलान को वापस ले लें। तंवर ने तो तुरंत यादव से फोन पर बात की। लेकिन यादव ने जवाब में कहा और बयान दिया कि हर बार यह अहसास करवाया जाता है कि हुड्डा ही सबकुछ हैं। यादव ने कहा कि अब वहीं रहेंगे, जहां पूरा सम्मान दिया जाएगा। बहरहाल, चोर-चोर मौसेरे भाइयों की लड़ाई में हरियाणा कांग्रेस का बेड़ा गर्क हो रहा है।

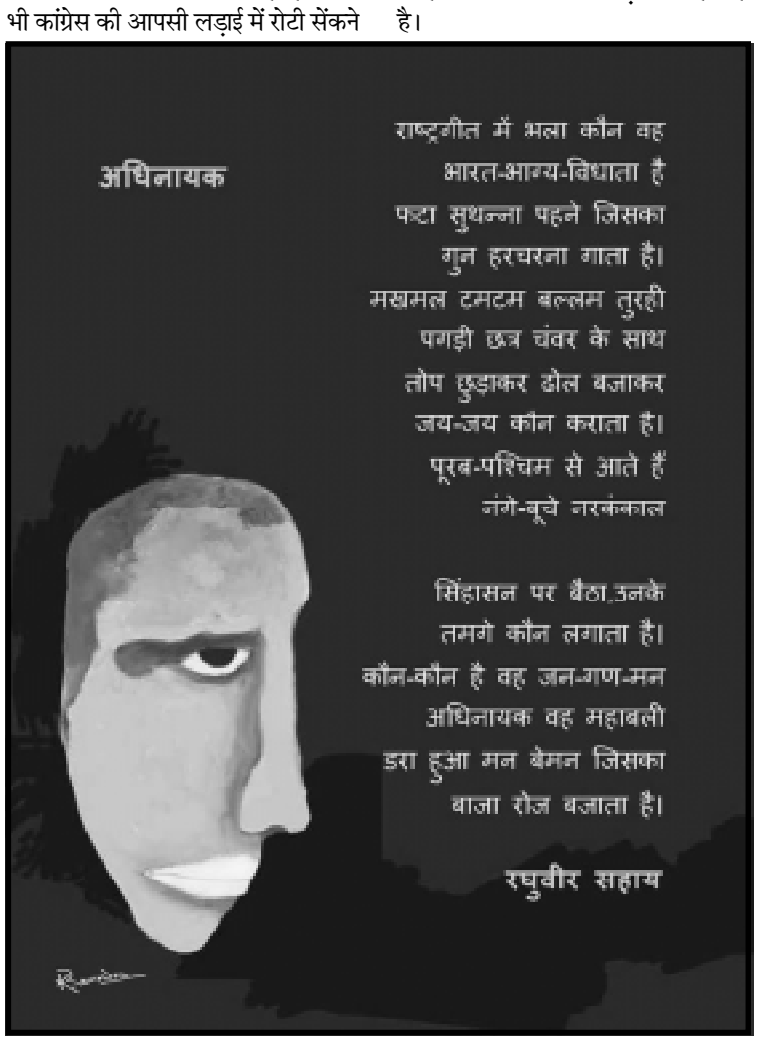

नीट के खिलाफ़ सरकारी अध्यादेश: लूट की छूट

सुप्रीम कोर्ट ने 9 मई को फ़ैसला दिया था कि मेडिकल कॉलेजों में एनईईटी (नीट) के जरिये ही दाखिला होगा। नीट यानी नेशनल एलिजिबिलिटी एण्ड इन्ट्रेन्स टेस्ट, देश के सभी मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के लिए केन्द्रीय स्तर पर परीक्षा की प्रणाली है। एक साथ मेडिकल प्रवेश परीक्षा के पक्ष में सुप्रीम कोर्ट के इस फ़ैसले से पूरे देश के छात्रों और उनके परिजनों में खुशी छा गयी लेकिन सरकार ने अध्यादेश जारी कर सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले को पलट दिया। अब छात्रों को अलग-अलग राज्यों में जाकर परेशानी नहीं उठानी पड़ेगी। यदि सुप्रीम कोर्ट का आदेश लागू हो जाता तो **1. देश के 400** मेडिकल कॉलेजों में से किसी भी एक में दाखिल होने के लिए एक ही परीक्षा देनी होती। **2. नीट के मेरिट** अंकों के मुताबिक छात्रों के पास अपनी पसंद के कॉलेजों में आवेदन करने का विकल्प होता। **3.** इससे पहले 100 अलग-अलग परीक्षाओं की फ़ीस 12,00 से 6,000 रुपये तक थी जिसमें अगर छात्र 4 या 5 जगह भी परीक्षा देते तो 5 हज़ार से 30 हजार रुपये तक का खर्चा आता जिससे छात्र बच जाते। **4.** निजी मेडिकल कॉलेज मनमाना डोनेशन नहीं ले पाते। **5.** राज्य स्तर पर कॉलेजों में प्रवेश के लिये व्यापमं जैसे घपलों की गुंजाइश नहीं रहती। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर न्यायालय ने नीट के पक्ष में फ़ैसला सुनाया था।

सुप्रीम कोर्ट के इस आदेश के बाद इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) के महासचिव ने कहा था, "अगर कार्यान्वयन सम्बन्धी बारीकियों को अलग रख दिया जाये तो नीट चिकित्सा पेशे के गौरवशाली अतीत को वापस लाने का काम करेगा। यानी वह दौर जब गरीब से गरीब घर का बच्चा भी प्रतिभा के दम पर डॉक्टर बन सकता था, वह दिन वापस आ जायेगा।

पिछले साल सभी मेडिकल कॉलेजों में कुल मिलाकर 49,900 सीटें थी, जिसमें 24,660 सीटें प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में थी, जो सभी लगभग पेमेन्ट सीट होती हैं। अगर एक सीट का दाम 50 लाख या इससे अधिक है तो समझा जा सकता है कि यह हर साल अरबों-करोड़ों का खेल है। अधिकांश मेडिकल कॉलेज़ों के मालिक राज्य या केन्द्रीय स्तर के बड़े नेता हैं। इसीलिए निजी मेडिकल कॉलेज मालिक और कुछ राज्य सरकारें सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले के खिलाफ़ थे। इनके विरोध के बहाने केन्द्र सरकार इस आदेश को बदलना चाहती थी ताकी पुरानी व्यवस्था जारी रहे। सुप्रीम कोर्ट के इस फ़ैसले के विरुद्ध जिस तरह पक्ष विपक्ष एकजुट हुए उससे उनकी आपसी सांठ-गांठ का भी पता चलता है।

सुप्रीम कोर्ट का आदेश निजी मेडिकल कॉलेजों की लूट को बन्द करने की दिशा में एक कदम था। संसद की स्थायी समिति का कहना है कि निजी मेडिकल कॉलेजों की अधिकांश सीटों के लिए 50 लाख रुपये या इससे भी अधिक रकम डोनेशन के नाम पर छात्रों से वसूली जाती है। यह ट्यूशन फ़ीस और अन्य खर्चों से अलग है जो गैर कानूनी है।

पिछले साल सभी मेडिकल कॉलेजों में कुल मिलाकर 49,900 सीटें थी, जिसमें 24,660 सीटें प्राइवेट मेडिकल कॉलेजों में थी, जो सभी लगभग पेमेन्ट सीट होती हैं। अगर एक सीट का दाम 50 लाख या इससे अधिक है तो समझा जा सकता है कि यह हर साल अरबों-करोड़ों का खेल है। अधिकांश मेडिकल कॉलेज़ों के मालिक राज्य या केन्द्रीय स्तर के बड़े नेता हैं। इसीलिए निजी मेडिकल कॉलेज मालिक और कुछ राज्य सरकारें सुप्रीम कोर्ट के फ़ैसले के खिलाफ़ थे। इनके विरोध के बहाने केन्द्र सरकार इस आदेश को बदलना चाहती थी ताकी पुरानी व्यवस्था जारी रहे। सुप्रीम कोर्ट के इस फ़ैसले के विरुद्ध जिस तरह पक्ष विपक्ष एकजुट हुए उससे उनकी आपसी सांठ-गांठ का भी पता चलता है।

देश के सर्वोच्च न्यायालय के फ़ैसले को, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मन्त्रालय से सम्बद्ध स्थाई समिति के प्रस्ताव को आईएमए के महासचिव की राय को तथा शिक्षा विशेषज्ञों के सुझावों और प्रस्तावों को दर किनार कर शिक्षा का व्यवसायीकरण करने के पक्ष में अध्यादेश लाना शिक्षा के प्रति केन्द्र सरकार के रवैये का इजहार है। यह धनाढ्यों के लिए मेडिकल कॉलेजों में प्रवेश के विशेषाधिकार को ज़ारी रखने वाला अध्यादेश है। यह पारदर्शिता की जगह घपलेबाज़ी के पक्ष में अध्यादेश है।

लड़ाई जारी है / सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

जारी है-जारी है
अभी लड़ाई जारी है।
यह जो छापा तिलक लगाए और जनेऊधारी है
यह जो जात पात पूजक है यह जो भ्रष्टाचारी है
यह जो भूपति कहलाता है जिसकी साहूकारी है
उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।
यह जो तिलक मांगता है, लडके की धौंस जमाता है
कम दहेज पाकर लड़की का जीवन नरक बनाता है
पैसे के बल पर यह जो अनमेल ब्याह रचाता है
यह जो अन्यायी है सब कुछ ताकत से हथियाता है
उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।
यह जो काला धन फैला है, यह जो चोरबजारी है
सत्ता पाँव चूमती जिसके यह जो सरमाएदारी है
यह जो यम-सा नेता है, मतदाता की लाचारी है
उसे मिटाने और बदलने की करनी तैयारी है।
जारी है-जारी है
अभी लड़ाई जारी है।